काव्यामृत

कर्नाटक हिंदी प्रचार समिति,
जयनगर, बेंगलुरू

बहुभाषा संगम संस्थे,
हुबली (पंजीकृत)

संयुक्त रूप से आयोजित

अंतर्राष्ट्रीय
काव्य गोष्ठी

संपादक

डॉ. वि. रा. देवगिरी

डॉ. विद्यावती राजपूत

प्रकाशक :

अधिकरण प्रकाशन

मकान संख्या-133, गली नम्बर-14, प्रथम तल,
बी-ब्लॉक, खजूरी खास, दिल्ली-110094
मोबाईल : 9716927587
ईमेल : adhikaranprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण	:	2020
आवरण चित्र	:	लेखक के सौजन्य
टाईप सेटिंग	:	मनीष कुमार सिन्हा
प्रिंटिंग	:	जी.एस. ऑफसेट, दिल्ली

© संपादक

ISBN : 978-93-89194-25-8
मूल्य : 150 रुपये

काव्यामृत(कविता संग्रह)-सं. डॉ. वि. रा. देवगिरी, डॉ. विद्यावती राजपूत
Kavyaamrut (Poetry Collection) Edited by Dr. V. R. Devagiri, Dr. V. G Rajput

दिल में यादें छोड़ गये।

यह इनसान बड़ा अद्भुत था।
सारे भारतीयों को अपना समझता था।
इसलिए आज धरा भी रो ली।
सोचकर मेरा प्यारा लाल आज खो दी।
भारत माँ की आंखों में मैंने नमी देखी
मेरा प्यारा अटल सी औलाद कभी न दे सकी,
इसे तो इनसान के रूप में जन्म दिया था
भारत रत्न मेरा अटल, इंसानियत से भी उपर उठ गया।
काल के कपाल पर ही एक कविता लिख दिया।
अजातशत्रु का संकल्प देकर चला गया।
जाते-जाते यह कह गया, मैं जाऊँगा नहीं यही रहूंगा,
भारत माँ की गोदी जीऊंगा।
रार न करो, वार न करो,
रमते रहना प्यार में।
मनुष्य हैं हम प्यार में,
पड़ोसी रहे सदा जहन में
अनु से लेकर बम जानते, समय-समय के साथ हैं।
सबसे पहले दुनिया वालों, आप सभी अपने ही हैं।

ऐसा संदेश छोड़ गये।
अटल, अटल ही बनकर रह गये।
बस हमारे दिल में यादें छोड़ गये।

—श्रीमती संध्या दत्ता कदम,
केनरा वेलफेर ट्रष्ट, दिवेकर कॉलेज ऑफ कामर्स, कोडीबाग,
कारवार-581301, जिल्हा उत्तर कन्नड, राज्य-कर्नाटक
संपर्क : 09448796762

डॉ. वि. रा. देवगिरी

उपाध्यक्ष

कर्नाटक हिंदी प्रचार समिति

बेंगलुरू

संपादक मंडल

[illegible]कुमार बिराजदार, शमीम [illegible]

नयी रचना नये विचार

अक्षर अक्षर आंखदार

ISBN : 978-93-89194-25-8